भजन

तर्ज– सुहानी चांदनी रातें

पिया ऐसा मिलन देखा,जुदाई अब नहीं भाती
जहां बिछुड़े मिले देखे,यह तन्हाई नहीं भाती

1– तुम्हारे प्यार में महकी हुई हर एक फुलवारी
महक आती है निजघर की शहनशाही यहां सारी
वह हर गुन्चा महकता था,यह वीरानी नहीं भाती

2– यहां हर चीज में प्रीतम का प्यारा प्यार लिपटा है
वह पंजाबी वह गुजराती सभी का प्यार सिमटा है
वह बहनें राजपूतों की भुलाई अब नहीं जाती

3– सहा जाता नहीं अब तो पिया इस गम से छुड़वालो
जहां हो आपके प्यारे कदम हम सबको बुलवा लो
तेरे दीदार से हो चौन,बेचौनी अब नहीं भाती